RC 1(ब)

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17-HL-**HL3**

निर्धारित समयः तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंकः 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): अनिल कुमार यादव

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): HL 3 / 13/8/17

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll No. UPSC (Pre) Exam-2017]: | | | 9 | 7 | 4 | 4 | 6 |

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं।

परीक्षार्थी को कुल ***पाँच*** *प्रश्नों के उत्तर देने हैं।*

प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं ***तीन*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिये।*

प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।

उत्तर हिन्दी (देवनागरी लिपि) में ही लिखे जाएंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 136½ टिप्पणी (Remarks): प्रयास अच्छा है। लेखन-शैली अच्छी है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) खड़ी बोली के विकास में ईसाई मिशनरियों की भूमिका

19वीं सदी में फोर्ट विलियम कालेज के साथ 1813 में ईसाई मिशनरियों के भारत आगमन से ही खड़ी बोली के विकास को प्रोत्साहन मिला।

ईसाई मिशनरियों की भूमिका निम्न रूपों में देखी जा सकती है—

1) इन्होंने भाषा के रूप को चुना जो जो बहुसंख्यक जनता द्वारा बोली हो। इस प्रकार इनके चुनाव का आधार लोक तांत्रिक था। इस पर तत्कालीन खड़ी बोली जो 'हिन्दुस्तानी' के रूप में जानी जाती थी, का दावा मजबूत था। अतः इन्होंने खड़ी बोली को अपने प्रचार-प्रसार का माध्यम बनाया

2) इन्होंने खड़ी बोली ~~हिन्दी~~ में अनेक पत्र-पत्रिकाएं निकाली और उनका निःशुल्क वितरण किया। इस प्रकार हिन्दी का विस्तार किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इतना ही नहीं न्यिम्बरलीन जॉन्से चोप ने खड़ी बोली को आधार बनाकर हिन्दी और भारतीय परम्परागत मूल्यों पर चोट किया तथा हिन्दी को जन सामान्य के साथ सम्वाद का माध्यम बनाना

4) "न्यू टेस्टामेंट" का हिन्दी में अनुवाद कर ईसाई धर्म का प्रचार किया। जिससे खड़ी बोली का भी प्रचार हुआ।

5) ईसाई मिशनरियों की प्रतिक्रिया में भारतीय नवजागरण के अग्रदूत राजा राममोहन व केशव चन्द्र आदि खण्डन, मण्डन तथा अपने विचारों के प्रसार में खड़ी बोली को चुना।

अनपुमार ईसाई मिशनरियों ने एक तरफ अपने धर्म के प्रचार से खड़ी बोली को आगे बढ़ाया तो वहीं उनकी प्रतिक्रिया में भारतीय नव-जागरण ने खड़ी बोली में उनका खण्डन व अपने विचारों का मण्डन किया।

6/10 Good

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ख) देवनागरी लिपि के मानकीकरण हेतु 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' के सुझाव

देवनागरी लिपि के मानकीकरण में जहाँ तिलक, सावरकर, गोरखनाथ का व्यक्तिगत प्रयास था वहीं नागरी प्रचारिणी सभा तथा "हिन्दी साहित्य सम्मेलन" का संस्थागत प्रयास भी था।

इसने निम्न प्रकार से नागरी लिपि के मानकीकरण का प्रयास किया—

1) नागरी प्रचारिणी सभा ने "हिन्दी साहित्य सम्मेलन" को हिन्दी के प्रचार और मानकीकरण के लिए आगे बढ़ाया था। "हिन्दी साहित्य सम्मेलन" ने काका कालेलकर की अध्यक्षता में एक समिति का गठन भी किया।

2) गाँधी जी 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' से जुड़े सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति थे इन्होंने हिन्दी के लिए अ की बारहखड़ी को अपनाया था। तथा 'हरिजन' पत्र में इसी का प्रयोग किया।

3) पुरुषोत्तम दास टण्डन ने हिन्दी के ~~लिए~~ मानक लिपि की आवश्यकता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पर जोर दिया तथा इसके लिए
निम्न सुझाव भी दिये -
1) शिरोरेखा का प्रयोग बना रहे।
2) बारहखड़ी का प्रयोग नहीं।
3) स्वर व व्यंजन साथ ही लिखे जाए।

इस प्रकार 20वी सदी में देवनागरी
लिपि के विकास में "हिन्दी साहित्य
सम्मेलन," प्रयाग का योगदान
अप्रतिम है जिसे महात्मा गांधी
और पुरुषोत्तम दास टण्डन जैसे
महान विभूतियों का साथ मिला।

है

5½

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) खड़ी बोली आंदोलन और अयोध्या प्रसाद खत्री

19वीं सदी में भारतेन्दु युग में खड़ी बोली आन्दोलन दो शैलियों में बट गया था जिसमें संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली आन्दोलन का नेतृत्व राजा लक्ष्मण सिंह और उर्दू व फारसी से युक्त खड़ी बोली का नेतृत्व राजा शिवप्रसाद 'सितारे' 'हिन्द' का रहे थे भारतेन्दु सहित अयोध्या प्रसाद खत्री जैसे लोग सितारे हिन्द की शैली के प्रस्तावक थे।

अयोध्या प्रसाद खत्री ने खड़ी बोली आन्दोलन को खड़ी बोली के 'सामासिक स्वरूप' के आधार पर समर्थन किया इन्होंने निम्न प्रयासों से खड़ी बोली आन्दोलन को आगे बढ़ाया

1) इनका साहित्यिक कार्य 'हिन्दुस्तानी भाषा' का साहित्य है। इन्होंने खड़ी बोली को जन सामान्य की भाषा बनाने में योगदान देकर आन्दोलन को गति प्रदान की।

2) इन्होंने हिन्दी खड़ी बोली को कार्यबद्ध

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तथा न्यायालय की भाषा बनाये जाने का समर्थन किया तथा इसके लिए पत्र-पत्रिकाओं में लेख भी लिखा।

3) नागरी लिपि को अधिकारिक लिपि बनाये जाने के अभियान में इन्होंने मालवीय जी द्वारा चलाये जा रहे मेमोरण्डम अभियान में भागीदारी भी की।

इस प्रकार अपने व्यक्तित्व व कृतित्व दोनों स्तरों पर इन्होंने खड़ीबोली आन्दोलन को समृद्ध करने का प्रयास किया परन्तु इनका प्रयास खड़ी बोली के "सामाजिक रूप" को आगे बढ़ाना था

बेहतर व्याख्या

4½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) ब्राह्मी लिपि और नागरी लिपिः अंतर्संबंध

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ब्रह्मी लिपि, आदि लिपि है तथा समस्त आधुनिक भारतीय भाषा लिपियों की जननी भी है। इस लिए नागरी लिपि का उद्गम और विकास, ब्रह्मी लिपि से ही है।

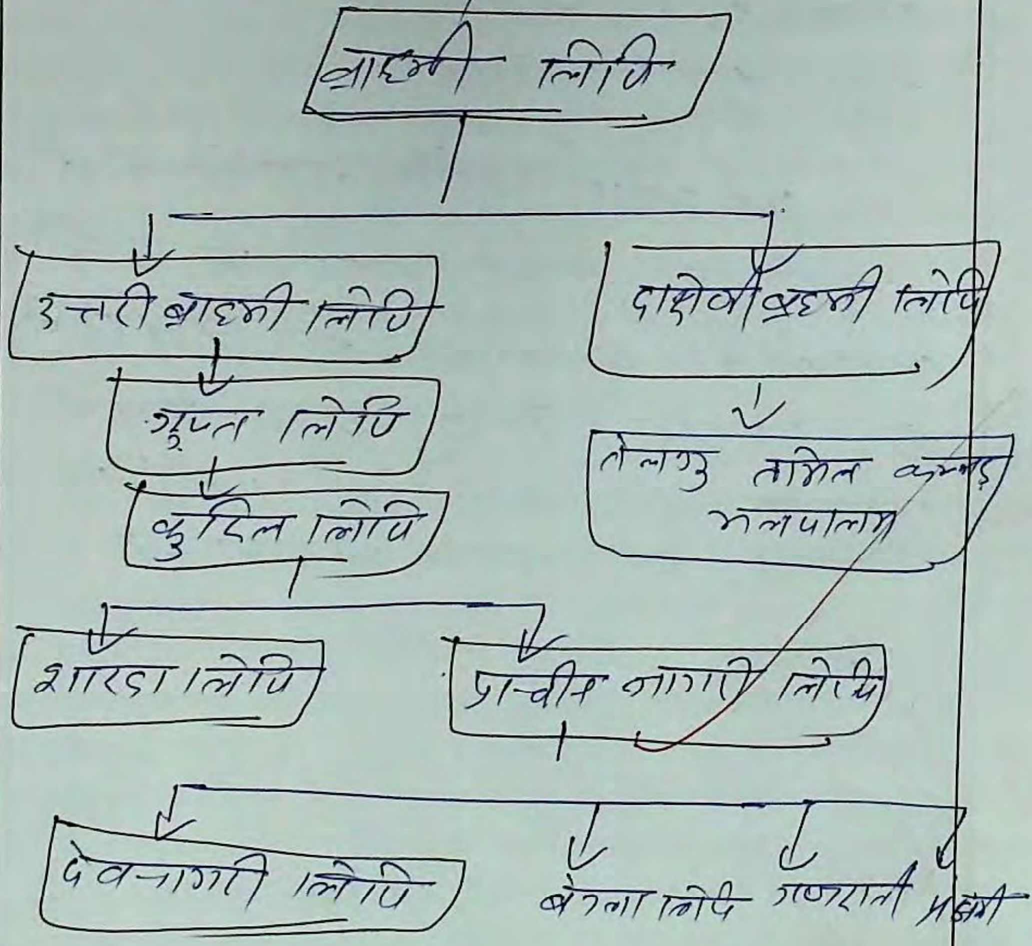

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस प्रकार नागरी लिपि का उद्भव ब्राह्मी लिपि से ही होता है जो गुप्त, कुटिल तथा प्राचीन नागरी होते हुए 'आधुनिक नागरी लिपि में बदल जाती है।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में आर्य समाज का योगदान

19वीं सदी में ईसाई मिशनरियों की प्रतिक्रिया तथा आधुनिक भाव बोध की चेतना ने राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास का मार्ग प्रशस्त किया। ब्रह्म समाज तथा प्रार्थना सभा के आर्य समाज सबसे ज्यादा प्रचलित व व्यापक संस्थागत प्रयास था जिसने राष्ट्रभाषा हिन्दी को आगे बढ़ाया।

आर्य समाज के संस्थापक दयानन्द सरस्वती गुजराती भाषी होकर भी हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में आगे बढ़ाया और 'सत्यार्थ प्रकाश' के माध्यम से इसका प्रचार प्रसार किया।

आर्य समाज की पत्र-पत्रिकाओं में भारतीय परम्परागत मूल्यों का प्रचार किया गया जिसका माध्यम 'हिन्दी' को बनाया गया। क्योंकि राष्ट्रभाषा के रूप में

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

वे हिन्दी को ही मानते थे।
दयानन्द सरस्वती ने कहा कि
" हिन्दी में ही राष्ट्रभाषा बनने की क्षमता है इसमें किसी को सन्देह नहीं होना चाहिए"।

इस प्रकार गाँधी आगमन से पूर्व आर्य समाज सबसे मजबूत संस्था थी जिसने राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को आगे बढ़ाया। इसी सीमा के थी वे संस्कृतनिष्ठ हिन्दी के समर्थक थे।

और है।

6

10

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) राजभाषा हिन्दी के विकास के संदर्भ में त्रिभाषा-सूत्र की परिकल्पना के महत्त्व पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राजभाषा के रूप में हिन्दी का विकास वैसे अपभ्रंश और प्राकृत काल से भक्ति काल में इसके प्रसार के साथ हुआ। परन्तु स्वाधीनता आन्दोलन में राष्ट्रभाषा के रूप में इसको सभी ने स्वीकारा। राजगोपालाचारी ने कहाँ "हिन्दी तो राष्ट्रभाषा है ही परन्तु जनतांत्रिक भारत में यह राजभाषा भी होगी।" यही कारण था जब संविधान सभा में भाग 17 के भाषा खण्ड पर बहस शुरू होई तो वहीं से समर्थन और विरोध की नई धारा चल निकली।

हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने की मांग की शुरूआत अहिन्दी भाषी क्षेत्र बंगाल से सर्वप्रथम होती है। इसका नेतृत्व गुजरात

Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के दयानन्द, गाँधी और नरसीमेहता करते हैं। और सर्वाधिक मुखर स्वर राजगोपालाचारी का होता है। दक्षिण भारत इनके विस्तार का स्रोत होता है।

राजभाषा के निर्माण पर बंगाल और दक्षिण भारत के विरोध तथा कमजोर राजनैतिक इच्छा शक्ति ने राजभाषा हिन्दी के विकास को अवरुद्ध किया। कमजोर सांविधिक प्रावधानों व कमजोर संस्थाओं ने इसमें वृद्धि की 1965 में हिन्दी के साथ अंग्रेजी को अनन्त काल के लिए साथ रखा गया। तत्पश्चात सरकारों ने इस समस्या को नकारा दिया।

त्रिभाषा सूत्र, भारत की भाषा समस्या का सबसे सटीक समाधान देता है। और यह सर्वाधिक व्यावहारिक समाधान भी है।

इस त्रिभाषा सूत्र के अनुसार शिक्षा का माध्यम अलग-अलग

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

स्तरों पर तीन भाषाओं को होना है जहाँ प्राथमिक भाषा, मातृभाषा हो जाए, वहीं माध्यमिक स्तर पर कोई और मातृभाषा का चुनाव किया जाए जैसे हिन्दी भाषी क्षेत्र में दक्षिण या पूर्वोत्तर की भाषा। उच्च माध्यमिक स्तर पर अन्तर्राष्ट्रीय भाषा 'अंग्रेजी' सिखाई जाए।

1967 के बाद इस दिशा में कार्य हुए कर्नाटक, आन्ध्रा, केरल में हिन्दी को शामिल किया गया। तमिलनाडु में विरोध हुआ और आज तक शामिल नहीं। इसलिए वहाँ विरोध अधिक।

हिन्दी भाषी क्षेत्रों या राज्यों ने द्वितीय भाषा के नाम पर संस्कृत सिखाया। इनमें दक्षिण भारतीय व पूर्वोत्तर में

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शंका व्याप्त है।

इसलिए राजभाषा के रूप में हिन्दी को स्थापित व स्वीकार्य बनाने के लिए त्रिभाषा सूत्र को उसकी मूल भावना के साथ लागू किया जाए तथा यह इंतजाम हिन्दी भाषी राज्य करें।

11½/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) देवनागरी लिपि के मानकीकरण हेतु सुझाव प्रस्तुत कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

देवनागरी लिपि के मानकीकरण हेतु निम्न सुझाव दिये जा सकते है —

(A) ध्वनि एवं संकेतों के स्तर पर

(1) ~~अ और श में~~ जहाँ उच्चारण में अन्तर है वहाँ मानक रूप के प्रयोग को बढ़ावा। -
यमुना > जमुना

(2) क़ ख़ ग़ ज़ फ़ में नुक्ता को स्वीकार किया जाय।

(B) व्यंजन या संयुक्त व्यंजन :

(i) क्ष त्र ज्ञ को स्वीकार किया जाय

(ii) 'ह्न व [illegible]' को मानक किया जाय क्योंकि इनका

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उच्चारण अब खत्म हो गया है।

(ii) 'ऋ' व 'री' का उच्चारण एक ही है अतः 'ऋ' को खत्म किया जा सकता है।

(ग) अनुस्वार व अनुनासिक-

→ "पंचमाक्षर" पद्धति को अपनाया जाए। जहाँ व्यंजन संयोग हो वहाँ ऊपर लिखा जाए - सम्बन्ध > संबंध

→ 'ङ' और 'ञ' का प्रयोग बना रहे। "वाङ्मय" लिखने में लिए जरूरी है।

(घ) द्विलिपता की समस्या:-

(1) ल > ल
ध > ध

(2) अंको में च (च) को मानक मान

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(6) विसर्ग :- — जहाँ तत्सम शब्द हो वहाँ विसर्ग हो चाहिए
" दुखः स्वस्थ "
तद्भव में आवश्यक नहीं।
दुख-सुख

(7) संबोधन :—

- संबोधन में अनुस्वार का प्रयोग न किया जाए।
भाइयों × भाइयो

- श्री को आगे लिखा जाए।

इस प्रकार ध्वनि, मात्रा, व्यंजन के स्तरों पर सुधार कर हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि का मानकीकरण किया जा सकता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) "हिन्दी भाषा एवं लिपि के विकास में 'नागरी प्रचारिणी सभा' का ऐतिहासिक महत्त्व है।" इस कथन पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी आन्दोलन को आगे बढाने में "नागरी प्रचारिणी सभा" सबसे महत्वपूर्ण संस्था रही है। इसकी स्थापना 1893 में बनारस में की गई। तभी से यह हिन्दी भाषा और लिपि के विकास को सम्पादित रही।

हिन्दी भाषा के लिए "नागरी प्रचारिणी सभा" ने किशोरीदास वाजपेयी को "हिन्दी शब्दानुशासन" लिखने का कार्य दिया। जिससे हिन्दी भाषा की प्राचीन व सांस्कृतिक संपन्नता को स्थापित किया जा सके। हिन्दी भाषा के प्रचार के लिए प्रचारिणी सभा ने कई पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन भी किया।

अस्पष्ट

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"हिन्दी शब्दानुशासन" में हिन्दी भाषा के उद्भव और उसको व्याकरणिक रूप से स्थापित करने का कार्य किया।

प्रचारिणी सभा ने ~~हिन्दी~~ भाषा के साहित्य के इतिहास के लिए आचार्य शुक्ल ने "हिंदी साहित्य का इतिहास" लिखा।

इतना ही इसने 'भाषा' को मैनोइस दिया कि हिन्दी को व्यापक रूप की भाषा और लिपि समझा जाए।

प्रचारिणी सभा ने "हिन्दी साहित्य सम्मेलन" की स्थापना में योगदान दिया हिन्दी भाषा और लिपि को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा लिपि के मानकीकरण हेतु डॉ श्यामसुन्दर को प्रोत्साहित किया।

इस प्रकार हिन्दी भाषा और लिपि को नागरी प्रचारिणी सभा ने व्यवस्था और मानक प्रदान कर दी थी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के विकास में निम्नलिखित व्यक्तियों के योगदान पर प्रकाश डालिये:

(i) महात्मा गांधी 20

(ii) बाल गंगाधर तिलक 10

(iii) मदनमोहन मालवीय 10

(iv) सेठ गोविन्द दास 10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(A) महात्मा गाँधी :-

राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के विकास को सर्वाधिक प्रभावित गाँधी जी ने किया। 1915 में भारत आगमन तथा भारत भ्रमण के दौरान उन्हें सबसे बड़ा मुद्दा भाषा का लगा क्योंकि भाषा ही वह माध्यम थी जिससे वे अपने विचारों को अभिव्यक्त कर सकते थे। इसलिए उन्होंने राष्ट्रभाषा की आवश्यकता पर ध्यान दिया।

गाँधी जी ने राष्ट्रभाषा की कसौटी —

1. सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली व समझी जाए
2. सिखने में आसान
3. देश की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति
4. क्षणिक न हो।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

उपरोक्त आधार पर गाँधी जी ने कहाँ - " हिन्दुस्तानी ही राष्ट्र भाषा हो सकती है।"

इसके साथ ही उनका मानना था - " अगर स्वराज पैसेवालों अमीरों के लिए है तो राष्ट्रभाषा अंग्रेजी होनी चाहिए किन्तु अगर गरीब, आशोषितों के लिए है तो हिन्दी ही राष्ट्र भाषा हो सकती है।"

गाँधी जी के लिए " भाषा का सवाल स्वराज का प्रश्न" था।

गाँधी जी 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' के अध्यक्ष भी रहे और हिन्दुस्तानी को राष्ट्र भाषा बनाने का प्रयास किया। दक्षिण में अपने पुत्र को प्रचार हेतु भेजा था।

इसके अलावा दक्षिण भारत राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, मद्रास तथा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा की भी स्थापना की।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गाँधी जी 1929 के बेलगाँव अधिवेशन में हिन्दी को कांग्रेस के कार्यक्रम में शामिल किया तथा 'हरिजन' के माध्यम से राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी का प्रचार किया।

गाँधी जी भाषा को सांस्कृतिक सेतु के रूप में प्रयोग करते थे " हिन्दी और उर्दू दो नदियाँ तथा हिन्दुस्तानी सागर है जिसका मुकाबला अंग्रेजी से है। "

रामविलास शर्मा ने हिन्दी के राष्ट्रभाषा के रूप में गाँधी के योगदान को प्रभावकारी व सार्वभौमिक बताया है जो सांस्कृतिक सद्भावना की भी भाषा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(11) बाल गंगाधर तिलक:-

राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को स्वीकारने वाले सबसे राष्ट्रवादियों में थे। 1893 में नागरीप्रचारिणी सभा की स्थापना की सराहना की।

इन्होंने 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' की नींव रखी जिसमें भाषा सबसे महत्वपूर्ण तत्वों में से एक थी। राष्ट्रभाषा के रूप में इन्होंने हिन्दी को चुना। इनका कहना था—

"राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के चुनाव में कोई सन्देह नहीं क्योंकि जनता की भाषा है।"

इन्होंने हिन्दी को "उग्र राष्ट्रवाद से जोड़ा तथा गरमपंथी आन्दोलन में हिन्दी ने बहुत योगदान दिया। लाल लाजपत राय व अरविन्दो ने इनकी प्रेरणा से राष्ट्र भाषा के रूप में पंजाब व बंगाल में 'हिन्दी

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

को आगे बढ़ाया।

इतना ही नहीं इन्हीं के प्रयासों से 1906 के कलकत्ता अधिवेशन में नरौजी ने "स्वराज" शब्द का पहली बार प्रयोग किया।

तिलक ने 'हिन्दी के प्रचार के लिए "तिलक कॉन्ट" का अविष्कार किया और "हिन्दी केसरी" पत्रिका के 1903 के प्रकाशन में इसका प्रयोग किया।

इस प्रकार तिलक ने राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी को नई ऊंचाई प्रदान की परन्तु इन पर संस्कृतनिष्ठ हिन्दी का आरोप भी लगा। फिर इनका योगदान अमूल्य है।

5/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मदनमोहन मालवीय:—

स्वागत स्तर पर राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के विकास को सर्वाधिक प्रभावित करने वाले व्यक्ति थे। इन्होंने हिन्दी को अतीत के गौरव से जोड़ा।

1893 में नागरीप्रचारिणी सभा के गठन में इनका सहयोग अतुलनीय तो था ही साथ ही 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग को भी इन्होंने बहुत प्रोत्साहित किया।

1886 के राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में इन्होंने हिन्दी में अपना भाषण दिया इस प्रकार पहली बार इन्होंने हिन्दी को कांग्रेस से जोड़कर इसके राष्ट्रभाषा बनने की सम्भावना को उजागर किया।

इतना ही नहीं इन्होंने 1917 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ हिन्दी को

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राष्ट्र भाषा के रूप में स्वीकार करने की अपनी मांग भी रखी।

इस प्रकार मदन मोहन मालवीय जी राष्ट्र भाषा के रूप में हिन्दी को संस्थागत करने का प्रयास किया।

5½/10

(iv) सेठ गोविन्द दास:-

इन्होंने राष्ट्र भाषा हिन्दी को बहुत तरह से आगे बढ़ाया। इन्होंने हिन्दी के प्रचार व प्रसार के लिए कई पत्र-पत्रिकाएं निकाली। इन्होंने हिन्दी के लिए कई शिक्षण संस्थानों की स्थापना भी की।

राष्ट्रीय शिक्षण संस्थान में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी के प्रचार को आगे बढ़ाया।

इन्होंने संविधान सभा में भाषा सम्बन्धी बहसों में हिन्दी का समर्थन किया तथा अहिन्दी भाषी लोगों की आशंकाओं को दूर करने का प्रयास भी किया।

इन्होंने माना की यदि स्वतंत्र भारत में राजभाषा बनने की क्षमता किसी भाषा में है तो 'हिन्दी' के अलावा कोई दूसरी नहीं हो सकती थी।

इन्होंने महात्मा गाँधी को अपना आदर्श बनाया था तथा आचार्य विनोबा भावे के साथ हिन्दी के राष्ट्रभाषा के रूप में विकास को आगे बढ़ाया।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) प्रताप नारायण मिश्र

भारतेन्दु मण्डल के सबसे "जिन्दादिल" लेखक प्रताप नारायण मिश्र थे। इनका पत्र "ब्राह्मण" इनकी प्रसिद्धि का सबसे महत्त्वपूर्ण आधार है।

इन्होंने गद्य और पद्य दोनों में अपना योगदान दिया परन्तु पद्य में इनका मन ज्यादा रमा था। "प्रताप लहरी" "मन लहर" इनका प्रमुख काव्य संग्रह है। ये कानपुर में रसिकों के बीच लावनी व कजली तथा समस्या पूर्ति से मनोरंजन करते थे। इनका कथन है - "~~पेटी पैदाइश~~ फागुन की है और होली की पैदाइश मशहूर है। अगर कभी होली का बैठे तो बुरा मत मानना।"

इसके अलावा ~~इन्होने~~ इन्होंने भावपरक निबन्ध लिखे इनालोए

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

इन्हें "हिन्दी का स्टील" कहा जाता है। भावप्रवणता इनके स्वभाव के अनुकूल ही है। इनका निबन्ध "बेगार" अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है।

इन्होंने न केवल लेखन किया बल्कि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के साथ मिलकर रंगमंच में काम भी किया। अभिनय भी किया करते थे।

इसप्रकार प्रताप नारायण मिश्र संवेदना और शिल्प दोनों स्तरों पर हिन्दी को समृद्ध किया तथा भारतेन्दु मण्डल के माध्यम आधुनिक हिन्दी के आदिकाल को स्थापित किया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. तार्ति

(ख) कविवचन सुधा

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का आगमन हिन्दी साहित्य में युगान्तकारी घटना है इन्होंने अपने व्यक्तित्व और कृतित्व से "भारत वर्ष की ~~उन्नति~~ कैसे हो" पर गम्भीर विचार किया।

"भारतेन्दु मैगजीन," 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका" तथा "कविवचन सुधा" इनके प्रमुख पत्रिका थे।

"कविवचन सुधा" में भारतेन्दु का प्रखर, जिन्दादिल व प्रगतिशील व्यक्तित्व निखर का सामने आया है। इस पत्रिका के माध्यम से भारतेन्दु ने "हिन्दी आन्दोलन" को गति प्रदान की। इस प्रकार "कवि वचन सुधा" भाषाई संघर्ष की वाहक बनी। इसमें हिन्दी भाषा के समर्थन में लेख लिखे जाते थे। और भाषा तथा लिपि दोनों के सवाल उठाये जाते थे।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'कविवचन सुधा" खड़ी बोली हिन्दी के साहित्यिक विकास में भी पर्याप्त योगदान दिया। इनमें नये-नये लेखकों की रचनाएं प्रकाशित की जाती थी। इसमें भाषा भी शिवप्रसाद सितारे हिन्द वाली हो प्रयोग की जाती थी।

इस प्रकार 'कविवचन सुधा" की "हिन्दी नई चाल में ढली" के प्रयोग को सफल बनाने में योगदान दी। शुक्ल जी के अनुसार इन्हीं प्रयासों से हिन्दी का स्वरूप स्थिर हुआ।

GW

6/10

पत्रिका का प्रकाशन-विशेषताएँ बताएँ

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिन्दी की मनोवैज्ञानिक उपन्यासधारा

प्रेमचन्द पश्चात हिन्दी उपन्यास की "कर्मभूमि" में बदलाव आता है। इसके "कायाकल्प" का प्रयास तेज होता है क्योंकि "जनता की चित्तवृत्तियों" की अभिव्यक्ति कई स्तरों पर हो रही थी। इसी धारा में मनोवैज्ञानिक उपन्यास धारा आती है।

यद्यपि फ्रायड, एडेलर व युंग के मनोविश्लेषणवाद से प्रभावित उपन्यास की धारा से पूर्व प्रेमचन्द ने व्यक्तिगत तथा सामूहिक मनोविज्ञान का अच्छा उपयोग "गबन", "गोदान" में किये किन्तु अज्ञेय, जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी और देवराज ने इसको नई ऊँचाई प्रदान की।

जैनेन्द्र ने "त्यागपत्र" "सुनीता" "कल्याणी" आदि के माध्यम से गाँधी और फ्रायड को मिला दिया।

अज्ञेय 'नदी के द्वीप' "शेखर एक जीवनी" में फ्रायड को सार्त्र से

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मिलाया।

इलाचन्द्र जोशी ने "जहाज के पंछी और 'निर्वासित'" में फ्रायड को ज्यादा शुद्ध रूप में पकड़ा है,
"अजय की डायरी" में देवराज ने नई ऊँचाई दी।

मनोवैज्ञानिक उपन्यास की निम्न विशेषता होती है -

(1) कथानक छूट जाता है तथा अत्यन्त सूक्ष्म हो जाता है इसका स्थान मंथन व चिंतन ले लेता है।

(2) चरित्रों के आंतरिक मन की बातों का उद्घाटन होता है।

(3) उद्देश्य कोई नहीं है केवल नैतिकता के बजाय आदर्श प्रतिमान दिखाना होता है 'निवृत्ति' और 'कामचेतना' के आधार पर नई नैतिकता की स्थापना

(4) अवचेतन व अचेतन मन का उद्घाटन होता है

(5) भाषा प्रतीकात्मक होती है।

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) केशव: कठिन काव्य के प्रेत

केशवदास रीतिकाव्य धारा के प्रमुख कवि हैं, इन्हे रीतिकाव्य का प्रवर्तक एवं आचार्य माना जाता है। एकतरफ इन्होंने संस्कृत काव्य शास्त्रों का अनुसरण करते हुए 'लक्षण ग्रन्थ परम्परा' की नींव रखी है तो दूसरी तरफ इन पर कठिन काव्य का आरोप भी लगता है।

दरबारी कवि हैं इन्होंने ओरछा में शिक्षा प्राप्त की थी। इसलिए इनकी भाषा में कठिनता आ जाती है।

इनका मानना है कि

"भूषण बिनु न विराजहि,
कविता बनिता मित्र"

इस प्रकार अत्यन्त अलंकार प्रियता के कारण इनका काव्य सामान्य व्यक्ति के लिए कठिन हो जाता है।

"मातु कहाँ है तात, गये है सुरलोकहि क्यों? सुत शोक लिये"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

वैसे केशव की 'संवाद योजना हिन्दी साहित्य मे अद्वितीय है परन्तु यह इनकी कठिनाई भी बन जाती है एक पंक्ति चार वाक्य डाल देते है

केशव के काव्य 'रामचन्द्रिका" "कवि प्रिया" 'रसिक प्रिया" इत्यादि में छन्द वैविध्य अत्यन्त है रामचन्द्र शुक्ल जी "रामचन्द्रिका" को "छन्दो का अजायबघर" कहते है।

इतना ही इनके काव्य में बुद्धि प्रेरित वक्रता है " वाम कुच और सर्प की तुलना इसका उदाहरण है शुक्ल जी इसकी आलोचना करते है

इस प्रकार केशव की प्रवीण जातिस्थिति तथा उनकी विद्वता उनको कठिन काव्य का प्रेत बनाती है परन्तु इन्होंने शास्त्र को नीव दे डाली है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) पद्माकर का श्रृंगार-वर्णन

रीतिकालीन रीतिबद्ध काव्यधारा के आखिरी स्तम्भ कवि हैं।

पद्माकर 'रीतिकाल' के प्रवर्तन कवियों में से है इनका शृंगार वर्णन भोगमूलक है इनमें प्रेम का औदात्य नहीं है यहीं इनके साहित्य में प्रेम क्रीडा का विषय है।

"गुलगुली गिल मे गलीचा है
चाँदनी है, चिक है चिरागन में माला है -
कहै पद्माकर सखि सेज है सुरा है सुराही
व और प्याला है।"

क्रीडात्मक प्रेम —

"बतरस लालच लाल की
मुरली धरी लुकाय,
दैन कहै भौंहन हँसै देय कहै नटिजाय"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पद्माकर का प्रेम व श्रृंगार प्रवृत्ति मूलक नहीं है। यह अनुभूति की सघनता से नहीं निर्मित हुआ है। यह दरबारी माहौल में मध्यकालीन मानसिकता उपजा है।

अपने अंतिम समय में अपराध बोध के कारण पद्माकर का देहमूलक श्रृंगार भक्ति के श्रृंगार में बदल जाता है।

5½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) स्त्री-विमर्श के आलोक में समकालीन हिन्दी उपन्यास पर विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

स्त्री पुरुष सम्बन्धों में परिवर्तन, स्त्री की आर्थिक मजबूती, वैश्वीकरण, उपभोक्तावाद, सूचना और संचार ने समकालीन हिन्दी उपन्यास को प्रभावित किया इसने उपन्यास की "मर्यादा" "आवां" में तपती है यहीं से हिन्दी उपन्यास में स्त्री विमर्श का सूत्रपात होता है।

स्त्री विमर्श के सन्दर्भ में नारी लेखकों की औसत राय है कि "सहानुभूति" कितनी भी गहरी क्यों न हो "स्वानुभूति" के स्तर को नहीं छू सकती है।

यही बात समकालीन नारीवादी उपन्यास में दिखाई देती है इन उपन्यासों में नारी चरित्र अत्यन्त सशक्त, जीवन्त और आत्मनिर्भर हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

ये नारीवादी उपन्यास पुरुष प्रधानता को स्वीकारते है तथा परम्परागत नैतिक प्रतिमानों, चरित्र नैतिकताओं, सतीत्व व पवित्रता की नई परिभाषा का गठन करते है।

इन सभी उपन्यासों नारी की देह से परे मन से इन की बात की जाती है - जैसे "चाक" मैत्रेयी पुष्पा का उपन्यास है।

मृदुला गर्ग का "चितकोबरा" उपन्यास इसी नैतिक समस्या को उभारता है।

मैत्रेयी पुष्पा का "इदन्नम" "चाक" उपन्यास में नारीवादी दृष्टि मुखर हुई है लेकिन यहां विद्रोह के साथ भावना का प्रयोग है।

"जिन्दगीनामा" कृष्णा सोबती ने विभाजन को आधार बनाया है।

स्त्री विमर्श पर लें

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृष्णा सोबती, प्रभा खेतान का "छिन्नमस्ता" हिन्दी उपन्यास में "बोल्डनेस" की शुरुआत है।

वहीं मन्नू भण्डारी का 'महाभोज' और "आपका बंटी" भारतीय राजनीति तथा असफल विवाह सम्बन्धों में बच्चे के स्थिति को उजागर करता है।

गीतांजलि श्री, और अनामिका के उपन्यासों में भी नारी को उपभोग की वस्तु बनाये जाने का विरोध है।

स्त्री रचनाकारों के अलावा हिमांशु जोशी, राजकिशोर 'तुम्हारा सुख' राजेन्द्र यादव ने भी नारी वादी दृष्टि उपन्यास लेखन किया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) रीतिकाव्य पर ललित कलाओं का प्रभाव किन रूपों में दिखाई पड़ता है? विवेचना कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रीतिकाव्य कला की दृष्टि से हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग कहा जा सकता है। ग्रियर्सन ने कहा था "बिहारी सा एक भी कवि यूरोप नहीं है"। मध्यकाल का उत्तर काल, कला के विकास की दृष्टि से सबसे समृद्ध काल है।

जहाँ मुगल सत्ता केन्द्रीय सत्ता थी पूरों का अभाव था। जहाँगीर और शाहजहाँ जैसे कला प्रेमी मुगल शासक थे।

ललित कला का संबंध कला के उन रूपों से होता है जो जनसामान्य की भागीदारी करें।

रीतिकाव्य में "ध्वन्यात्मकता" पर संगीत की कला का प्रभाव है। इसी काल में हिन्दुस्तानी संगीत का ग्वालियर घराना स्थापित है। राजस्थान में रागों का प्रयोग बढ़ता है। यही राग समाज जाते

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

में प्रयोग हो रही होती है। यह आगे वाली रीति काव्य में भी दिखाई पड़ती है

" तरनी तनाने की "

" गुल गुली गिल में गलीचा है,
चाँदनी है, चिक है, चिरागन की माला है।

इसी को ध्यान में रखकर आचार्य राम स्वरूप चतुर्वेदी ने लोलित कला और रीति काव्य में समानता के तत्व देखें।

उदाहरण : चित्रकला प्रेमी था/ पद्माव बिहारी की कविता में दिखता है एक तरफ बिहारी बिम्बो से 'चलचित्र' का प्रमाण देते हैं तो दूसरी तरफ इनको रंगो के मिश्रण का भी ज्ञान है।

" बतरस लालच लाल की मुरली धरि लुकाय"
" सौंह करै भौंहनु हँसै, दैन कहै नहि जाय।"

- चलचित्र प्रमाण

मेरी भव बाधा हरो राधा नागरि सोई
जा तन की झाँई परत स्याम हरित दुति होय

- रंग का ज्ञान

इस प्रकार रीति काव्य और कला में गहरा सम्बंध है।

6½/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) जैनेन्द्र के उपन्यास 'त्यागपत्र' के मृणाल के चरित्र पर प्रकाश डालिये। 15

मनोवैज्ञानिक उपन्यास लेखक जैनेन्द्र का सर्वाधिक प्रसिद्ध उपन्यास "त्यागपत्र" है इसमें इन्होंने गाँधी को फ्रायड से मिला दिया है। 'गोदान' का होरी जहाँ पुरुष चरित्र में हिन्दी उपन्यास परम्परा में जो स्थान रखता है वही स्थान नारी पात्रों में "त्याग पत्र" की मृणाल का है।

विशेषताएँ -

① आत्मनिर्णय व आत्मविश्वास :

मृणाल के चरित्र की मूल विशेषता है। वह अपने को कभी प्रमोद के सामने कम नहीं दिखाती

② चरित्र की वक्र गति -

मृणाल के जीवन में हमेशा उतार चढ़ाव आया है

③ आत्म विसर्जन से हृदय परिवर्तन

मृणाल अपने आत्म विसर्जन से

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

से अपने भतीजे प्रयोग का स्वरूप परिवर्तन करती है तथा उसको "त्याग पत्र" से मजबूर करती है।

(4) स्वावलम्बी - अपना खर्च स्वयं चलाती है। अपने आपके नहीं आती है।

(5) समाज से निवेदन नहीं चाहती है

"विवाह दो व्यक्ति नहीं बल्कि समाज की बाँन्धि है"

"समाज से टूटों तो जुड़ेंगे कैसे"

(6) यौन नैतिकता :- यहाँ स्त्रीत्व व चरित्र की पवित्रता की परिभाषा बदल गई है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इस प्रकार मृणाल का चरित न केवल "त्यागपत्र" बल्कि हिन्दी उपन्यास साहित्य का एक अद्वितीय चरित बन गया है जो ज्यादा सरल, जीवंत और व्यक्तित्व सम्पन्न है।

ठीक है

8/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation